भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केंद्रीय कमेटी

प्रेस वक्तव्य

दिनांक–06 सितंबर, 2017

ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी संघ परिवार की गुण्डा ताकतों द्वारा प्रगतिशील व वामपंथी पत्रकार गौरी लंकेश की जघन्य हत्या के खिलाफ एकजुट व जुझारु कार्रवाई का आह्वान!

ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी संघ परिवार की गुण्डा ताकतों जिन्हें केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा सरकार का संपूर्ण समर्थन व संरक्षण प्राप्त है, द्वारा 5 सितंबर की रात 8.30 बजे को बेंगुलूरु में लंकेश साप्ताहिक पत्रिका की संपादक, प्रगतिशील–जनवादी व वामपंथी विचारधारा की सामाजिक कार्यकर्ता 55 साल की गौरी लंकेश की गोली मारकर की गयी जघन्य हत्या की भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी कड़ी निंदा करती है. देश के तमाम प्रगतिशील–जनवादी बुद्धिजीवियों, लेखकों, कलाकारों, इतिहासकारों, प्रिंट व इलेक्ट्रानिक मीडिया कर्मियों, मानवाधिकार संगठनों व कार्यकर्ताओं, वामपंथी ताकतों, दलितों, पिछड़ों, धार्मिक अल्पसंख्यकों, धर्मनिरपेक्ष ताकतों, छात्र–छात्राओं, शिक्षकों व महिलाओं का हमारी पार्टी आह्वान करती है कि वे ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवाद के खिलाफ वैचारिक दृढ़ता व मजबूत इरादे के साथ जुझारु कार्यवाहियों के लिए सड़कों पर उतरें.

अपने पिता द्वारा शुरु की गयी पत्रिका 'लंकेश' की गौरी लंकेश संपादक थी. प्रगतिशील–जनवादी, वामपंथी विचारों से लैस गौरी पत्रकार के अलावा सामाजिक कार्यकर्ता भी थी. जन आन्दालनों के पक्ष में वो निर्भीकता के साथ खड़ी रहती थी. जनपक्षधरता वाली पत्रिका लंकेश में वे सरकारों की जन विरोधी नीतियों, दलितों व धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हिन्दुत्व ताकतों द्वारा जारी हमलों व भ्रष्ट सरकारी तंत्र के खिलाफ नियमित रूप से लिखती थी. गुजरात में मोदी के मुख्यमंत्रित्व काल में मोदी–अमित शाह के मार्गदर्शन व संरक्षण में मुसलमानों पर किए गए क्रूर हमलों व उनके कत्लेआम का पर्दाफाश करने वाली राना अय्यूब की 'गुजरात फाइल्स' का कन्नड़ भाषा में अनुवाद करके हिन्दू धार्मिक कट्टरपंथियों की धमकियों को धत्ता बताकर गौरी ने उन्हें लंकेश में छापा था. इसी वजह से गौरी हिन्दुत्व फासीवादियों की आंखों की किरकिरी बन गयी थी.

गौरी की हत्या के बाद एक सार्वजनिक भाषण में भाजपा के एक जिला नेता डीएन युवराज द्वारा यह स्वीकारोक्ति कि 'चड्डी वालों की मौत का यदि गौरी जश्न नहीं मनाती तो क्या वह आज जिंदा नहीं होती?' स्वयमेव यह साबित करती है कि गौरी की हत्या उनकी हिन्दुत्व फासीवाद विरोधी विचारधारा के चलते की गयी है. आरएसएस के एक स्थानीय नेता द्वारा इस सुनियोजित हत्या की निंदा करना वैसा ही है जैसा चोर ही चोर–चोर करके चिल्लाना. गौरी की हत्या पर प्रधान मंत्री की चुप्पी अपने आप संकेत देता है कि हत्या के पीछे संघीय ताकतें हैं. एक तरफ समूचा देश निर्विवाद स्वरूप व बेबाकी से यह कह रहा है कि गौरी की हत्या के पीछे हिन्दुत्व ताकतें हैं तो दूसरी तरफ दबाव या धौंस के जरिए गौरी के भाई से यह कहलवाना कि गौरी की हत्या के पीछे माओवादियों/नक्सलवादियों के भी हाथ हो सकते हैं, हिन्दुत्व ताकतों की नीच व घृणित करतूत है. हालांकि कर्नाटक की सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार ने विशेष जांच दल नियुक्त किया है लेकिन यह जगजाहिर है कि अब तक देश भर में कहीं भी इस तरह की हत्याओं के दोषियों को न पकड़ पाए हैं और न ही सजा दिला पाए हैं. जब असली दोषी सत्ताधीश हैं, तो स्वाभाविक है, इस जांच की नौटंकी से कुछ होने वाला नहीं है.

विचारों व विरोध को खत्म करने के लिए जारी हत्याओं का यह सिलसिला संघ परिवार की भाजपा के सत्तासीन होने के बाद से बेरोकटोक व बेलगाम तेज हो गया है. तर्कवादी व अंधाश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष नरेंद्र दाभोलकर, वामपंथी गोविंद पानसरे, ख्यातप्राप्त लेखक एमएम कलबुर्गी सहित कई जनपक्षधर पत्रकारों की निर्मम हत्याओं की निरंतरता का ही हिस्सा है, गौरी की हत्या. रूढ़ीवाद, अंधश्रद्धा, धार्मिक कट्टरता, शोषण–जुल्म, भ्रष्टाचार की खिलाफत एवं प्रगतिशील–जनवादी, वामपंथी, उत्पीड़ित–शोषित जनपक्षधरता वाले व क्रांतिकारी विचारों व व्यवहार के प्रति शासकों की असहिष्णुता चरम पर है. शोषक–शासक वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाली सरकारें अपनी जन विरोधी व देशी, विदेशी कॉरपोरेटपरस्त नीतियों के खिलाफ उठने वाली हर आवाज को यहां तक कि मीडिया हाउजों(उदाहरण के लिए एनडी टीवी) को दबाने और सवाल करने वाले हर व्यक्ति का सफाया करने पर तुली हुई हैं. शोषणविहीन नवजनवादी समाज व्यवस्था की स्थापना के लिए जारी जनयुद्ध को संचालित करने वाली हमारी पार्टी के नेताओं, कार्यकर्ताओं सहित हमारी पार्टी के नेतृत्व में स्थापित हो रही जनराज्यसत्ता के अंग–क्रांतिकारी जनता ना सरकारों के कार्यकर्ताओं, अपने जल–जंगल–जमीन व संसाधनों को बचाने के लिए जारी विस्थापन विरोधी जन आन्दोलनों के नेताओं, कार्यकर्ताओं, जनवादी–प्रगतिशील एवं मानवाधिकार आन्दोलनों के नेताओं व कार्यकर्ताओं एवं संघर्षरत जनता की मुठभेडों व झूठी मुठभेडों में पाशविक तरीके से हत्या की जा रही है. सैकड़ों को गिरफ्तार करके फर्जी मुकदमों में फंसाकर जेलों में सड़ाया जा रहा है. यह सब दरअसल देश की प्राकृतिक संपदाओं व संसाधनों, सार्वजनिक संपत्ति, श्रमशक्ति एवं बाजार को

कौड़ियों के भाव देशी, विदेशी कॉरपोरेट घरानों के हवाले करने तथा हिन्दुत्व एजेण्डे को आगे बढ़ाते हुए देश को हिन्दू राष्ट्र में तब्दील करने की साजिश के तहत ही किया जा रहा है. हिन्दुत्व फासीवाद इस दिशा में आक्रामक रूप से आगे बढ़ने के तहत विपक्ष सहित तमाम बुर्जुआ जनवादियों का सफाया करने पर जोर दे रहा है. यह 1930 के दशक में जर्मनी में नाजी गुण्डा गिरोहों द्वारा यहूदियों, मजदूर नेताओं, कम्युनिस्टों, जनवादी लेखकों की खुलेआम की गयी हत्याओं के नक्शेकदम जारी है. यहां दिन–ब–दिन संघ परिवार के हिन्दुत्व फासीवादी गुण्डा गिरोहों का नंगा नाच बढ़ रहा है.

देश के चार उत्पीड़ित व शोषित वर्गों–मजदूर, किसान, छोटे पूंजीपति व देशीय पूंजीपति वर्गों की जनता के अस्तित्व व असली विकास की राह में हिन्दुत्व फासीवाद बहुत बड़ा रोड़ा बना हुआ है. यह देश को मध्य युगों की अतार्किक्ता, अज्ञानता, अवैज्ञानिकता की अंधेरी गर्त में धकेलने की कोशिश में लगा है. यह हमारे समय के व भावी पीढ़ियों के समरसतापूर्ण जनजीवन के लिए भी सबसे बड़ा खतरा है.

यह सिलसिला यदि ऐसा ही जारी रहा तो कल इसके खिलाफ बोलने के लिए कोई नहीं बचेंगे. यहां यह स्वागतयोग्य है कि गौरी की हत्या के खिलाफ देश के हर कोने से विरोध का स्वर गूंजा है. लेकिन सांकेतिक व प्रतीकात्मक विरोध आज काफी नहीं है. वक्त की मांग है कि हम उससे भी आगे बढ़ें. आएं! आज नहीं तो कभी नहीं के तर्ज पर इस खतरे से निपटने के लिए फौरन एक्शन पर उतरें. हमारी पार्टी आह्वान करती है कि ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवाद के खिलाफ व्यापक, जुझारु व संगठित संयुक्त मोर्चा का निर्माण करने व समुचित कदम उठाने व कार्यवाहियां करने कमर कस लें व कदम बढ़ाएं.

Abhay

(अभय)
प्रवक्ता
केंद्रीय कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)